दिनांक 28 फरवरी से 04 मार्च

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के तत्वाधान में, राष्ट्रीय पुर्नवास परिषद के वित्तीय सहयोग से पाँच दिवसीय Refresher Program on Research Methodology in the field of special education and Disability Rehabilitation का आयोजन श्री दर्शन महाविद्यालय, मुनि की रेती, ऋषिकेश में किया गया।

दिनांक 28 फरवरी 2019

कार्यशाला के प्रथम दिन दिनांक 28 फरवरी 2019 को कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि श्री मनोहर कांत ध्यानी जी (पूर्व राज्यसभा सांसद) विशिष्ट अतिथि श्री ज्ञान सिंह नेगी जी, उपाध्यक्ष, स्वास्थ्य सलाहकार समिति, उत्तराखण्ड, प्रो0 ओ0 पी0 एस0 नेगी, कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के द्वारा दीप प्रज्वलन करके किया गया।

दिव्यांगों को शिक्षत करने वाले शिक्षक महान

ऋषिकेश : उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी एवं भारतीय पुनर्वास परिषद नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में दिव्यांगों की शिक्षा एवं पुनर्वास के क्षेत्र में अनुसंधान संबंधी प्रतिनिधियों के विषय पर चार दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया।

दर्शन महाविद्यालय में आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ मुख्य अतिथि पूर्व राज्यसभा सांसद मनोहर कांत ध्यानी, विशिष्ट अतिथि स्वास्थ्य सलाहकार अनुश्रवण परिषद के उपाध्यक्ष ज्ञान सिंह नेगी, संसदीय सलाहकार आश्वासन समिति लोकसभा सलाहकार डॉ. राजेश नैथानी, मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ओमप्रकाश सिंह नेगी ने दीप प्रज्वलित कर किया। राजेश नैथानी ने दिव्यांगों की शिक्षा व पुनर्वास में शोध हेतु आंकड़ों की सत्यता व उनकी वैधता पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने शोध में नवीन पद्धतियों के अनुप्रयोग पर बल देते हुए दिव्यांगों की शिक्षा के लिए नवीन तकनीकी पर बल दिया। (जासं)

मुख्य अतिथी श्री मनोहर कांत ध्यानी जी अपने उद्बोधन में यह बताया कि मन को एकाग्र करना जरूरी है। शोध ऐसा हो जो सबके लिए हितकारी होने के साथ ही लाभदायक भी हो। विशिष्ट अतिथि श्री ज्ञान सिंह नेगी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षक का कर्तव्य अपने छात्रों

को संस्कारी एवं ज्ञानवान बनाना हैं। इसके लिए शिक्षक को अपने शिक्षण में लगातार नित नये प्रयोग करने होंगे। कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, प्रो0 ओ0 पी0 एस नेगी ने अपने सम्बोधन में कहा कि मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा दिव्यांगों की शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। साथ ही दिव्यांग विद्यार्थियों को परीक्षा एवं प्रवेश के समय केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा जारी निर्देशानुसार बाधारहित वातावरण एवं सुविधांए प्रदान की जा रही हैं। कार्यशाला संयोजक डॉ0 सिद्धार्थ पोखरियाल ने अपने उद्बोधन में कार्यशाला के उद्देश्यों एवं महत्व को बताया। श्री दर्शन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 राधामोहन द्वारा सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम दिवस दिनांक 28 फरवरी 2019

प्रथम तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता डॉ0 राजेश नैथानी, सलाहकार, संसदीय आश्वासन समीति लोकसभा, भारत सरकार ने अपने वक्तव्य में अविष्कार एवं नवोन्मेषी प्रयोगों के विषय में बताया और इस बात का स्पष्ट किया कि अविष्कार को नवोन्मेषी तरीके से कैसे प्रयोग किया जा सकता

है। नवोन्मेषी प्रयोग समाज के लिए कैसे उपयोगी हो सकते हैं। संसाधनों को एकत्र करने एवं उनके उपयोग करने के विषय में जानकारी दी।

द्वितीय तकनीकी सत्र में प्रो0 अवनीश अग्रवाल (लखनऊ विश्वविद्यालय) ने शोध के चरणों के विषय में जानकारी दी तथा उन्होंने कहा कि Sympathy की जगह Empathy शब्द का प्रयोग अधिक उचित है। उन्होंने बताया कि शोध उद्देश्य कहाँ से आते है। किस विषय वस्तु का शोध के लिए चुना जाना चाहिए। इन प्रश्नों पर विचार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि प्रश्नों के द्वारा ही उद्देश्यों की उत्पत्ति होती है।

तृतीय तकनीकी सत्र में प्रो0 प्रतिभा नैथानी, ग्राफिक ऐरा विश्वविद्यालय ने अपने वक्तव्य में बताया कि शोध शीर्षकों का चयन किस तरीके से किया जाना चाहिए।

चतुर्थ तकनीकी सत्र में डॉ0 रश्मि पंत (एम0बी0पी0जी0) महाविद्यालय हल्द्वानी ने शोध में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला।

दिनांक 01 मार्च 2019

प्रथम तकनीकी सत्र में डॉ0 हर्ष डोभाल (प्रो0 दून विश्वविद्यालय) ने अपने वक्तव्य में अक्षमता के विषय में विस्तृत रूप से जानकारी प्रदान की उन्होंने कहा कि अक्षमता के लिए शिक्षा प्राथमिक स्तर से दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि अपने प्रयासों के द्वारा विशिष्ट शिक्षा को बढ़ाया जाना चाहिए। उनहोंने कहा कि अक्षम बालकों की शिक्षा के लिए सभी लोगों को मिलकर प्रयास करने होंगे।

द्वितीय तकनीकी सत्र में प्रो0 एस0 पी0 सती (कुलसचिव वानिकी विश्वविद्यालय) ने बताया कि विशिष्ट शिक्षा में शोध में अति संवेदनशील होना आवश्यक है। ऑकड़ों का संग्रहण करना भी एक तरह का शोध है। शोध Solution Finding Approach के साथ होना चाहिए।

तृतीय तकनीकी सत्र में डॉ0 दयाधर दिक्षित (ऋषिकेश महाविद्यालय) ने अपने वक्तव्य में बताया की शोध एक चक्रीय प्रक्रिया है उन्होंने कहा कि शोध में भाषा स्पष्ट होनी चाहिए शब्दों का

चयन उचित होना चाहिए। रिपोर्ट लेखन में भाषा द्विअर्थी नहीं होनी चाहिए। शोध में एब्सट्रेक्ट, शोध रिपोर्ट की तरह कार्य करता है।

चतुर्थ तकनीकी सत्र में डॉ0 पूजा जुयाल (उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय) ने कार्यशाला में आए हुए प्रतिभागियों के साथ सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि के विषय में विस्तार से जानकारी दी।

दिनांक 02 मार्च 2019

प्रथम तकनीकी सत्र में डॉ0 विनोद कैन, NIVH Dehradun ने शोध प्रस्ताव के बारे में विस्तार से बताया। Funding कहाँ से और कैसे हो सकती है इसके बारे में भी जानकारी दी । Funding को कैसे उपयोग किया जाता है और मंत्रालय से Funds कैसे लिया जा सकता है इसके बारे में भी बताया। Research Project कैसे और कहाँ से मिलते हैं उसके बारे में भी जानकारी दी। प्रोजेक्ट के लिए Data Collection एक महत्वपूर्ण कार्य है एवं समय सीमा निर्धारण भी जरूरी है।

द्वितीय तकनीकी सत्र में डॉ0 गीतिका मल्होत्रा, प्रिंसिपल, पेस्टलवोड कालेज, देहरादून ने अपने वक्तव्य में प्रतिदर्शन विधियों के विषय में जानकारी दी । प्रतिदर्शन के सैद्धान्तिक आधारो के विषय में बताया। प्रतिदर्शन की Probability तथा Non Probability विधियों की व्याख्या की।

तृतीय तकनीकी सत्र में डॉ0 सिद्धार्थ पोखरियाल (उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय) ने दिव्यांगो की शिक्षा के अनुसंधान से सम्बन्धित नवीन शोध प्रविधियों के विषय में जानकारी दी।

चतुर्थ तकनीकी सत्र में श्रीमती मनीषा पन्त (उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय) ने आँकड़ों के विभिन्न प्रकारों क्रमिक, आँकड़े नामित आँकड़े एवं आनुपातिक एवं अन्तराल आँकड़ों के विषय में विस्तृत जानकारी दी।

दिनांक 03 मार्च 2019

प्रथम तकनीकी सत्र में प्रो0 वेंकटेश लू (इग्नू) ने विशिष्ट शिक्षा तथा समावेशी शिक्षा के विषय में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने शोध क्या है। तथा क्रियात्मक शोध के विषय में जानकारी प्रदान की। तथा सर्व शिक्षा अभियान एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान एवं दिव्यांग जन अधिकार अधिनियम – 2016 को विस्तार पूर्वक सम उन्होंने शिक्षा के ऑनलाइन माध्यम के विषय में बताया।

द्वितीय तकनीकी सत्र में डॉ0 डॉ0 सिद्धार्थ पोखरियाल (उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय) ने अधिगम अक्षम बालकों से सम्बन्धित विभिन्न अधिनियमों के विषय में जानकारी दी।

तृतीय तकनीकी सत्र में डॉ0 गीतिका मल्होत्रा, प्रिंसिपल, पेस्टलवोड कालेज, देहरादून ने शोध नैतिकता के विषय में जानकारी दी।

चतुर्थ तकनीकी सत्र में डॉ0 रश्मि पंत (एम0बी0पी0जी0) महाविद्यालय हल्द्वानी ने नैदानिक मनोविज्ञान का दिव्यांग बालको के विकास हेतु कैसे उपयोग किया जा सकता है। इस विषय में जानकारी प्रदान की।

दिनांक 04 मार्च 2019

प्रथम तकनीकी सत्र में डॉ0 सिद्धार्थ पोखरियाल (उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय) ने अपने विभिन्न प्रकार की अक्षमताओं के सन्दर्भ में जानकारी प्रदान की तथा उससे सम्बन्धित शोध विकल्पों को बताया।

कार्यशाला समापन

कार्यशाला के समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री प्रेमचंद्र अग्रवाल (राज्य विधानसभा अध्यक्ष) एवं विशिष्ट अतिथि राज्य उच्च शिक्षा उन्नयन परिषद की सलाहकार श्रीमती दीप्ती रावत द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि भविष्य में किए जाने वाले अनुसंधान से देश में दिव्यांग लोंगो को सशक्त करने में सहायता मिलेगी। मुख्य अतिथि राज्य विधानसभा अध्यक्ष श्री प्रेमचंद्र अग्रवाल ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि पूरे देश में विभिन्न प्रकार की दिव्यांग लोंगो की संख्या ढ़ाई करोड़ से अधिक है। अतः वर्तमान समय में हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम इन दिव्यांगो की शिक्षा एवं पुर्नवास के लिए अपने आसपास के लोंगो को जागरूक करें तथा आवश्यकता है कि कैसे हम दिव्यांग लोंगो को सशक्त करें तथा कैसे उनका पुर्नवास किया जाए इन बातो में शोध अनुसंधान किया जाना आवश्यक है। कार्यशाला में प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा प्रमाण–पत्र वितरित किए गए। कार्यशाला के अन्त में प्रो0 आर0 सी0 मिश्र (उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय) के द्वारा अतिथियों एवं समस्त प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया। कार्यशाला संपादक डॉ0 सिद्धार्थ पोखरियाल ने कार्यशाला की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

Welcome
to all
Guest of Honour, Resource Person & Participants
in
Rehabilitation Council of
India New Delhi

amarujala.com

प्रदेश में 18 हजार दिव्यांग शिक्षा से वंचित : प्रेमचंद

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा, दिव्यांगों को सशक्त करने की जरूरत

अमर उजाला ब्यूरो

प्रतिभागियों को सम्मानित करते विस अध्यक्ष प्रेमचंद अग्रवाल। अमर उजाला

मुनिकीरेती । दिव्यांगजनों को आत्मविश्वास व स्वाभिमान के साथ खड़ा होकर समाज की मुख्यधारा से जोड़ना सबका कर्तव्य है। इसके लिए लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है। यह बात विधानसभा अध्यक्ष प्रेमचंद्र अग्रवाल ने कही। रविवार को मुनिकीरेती स्थित श्री दर्शन संस्कृत महाविद्यालय में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय व भारतीय पुनर्वास परिषद् दिल्ली के तत्वाधान में दिव्यांगों की शिक्षा व पुनर्वास के क्षेत्र में अनुसंधान पर कार्यशाला संपन्न हुई।

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि पूरे देश में दिव्यांगों की संख्या 2.5 प्रतिशत से अधिक है। 18 हजार दिव्यांग बच्चे राज्य में संसाधनों की कमी के कारण शिक्षा से वंचित हैं। उन्होंने कहा कि विज्ञान, गणित, इतिहास आदि विषयों में शोध बहुत हुए हैं। वर्तमान में दिव्यांगों को सशक्त करने की आवश्यकता है। कई ऐसे उदाहरण हैं जिन्होंने दिव्यांगता को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। इनमें महान कवि सूरदास, वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंस, भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित इरा सिंघल शामिल हैं।

इस अवसर पर उच्च शिक्षा उन्नयन समिति की उपाध्यक्ष दीप्ति रावत, नगर पालिका मुनिकीरेती के अध्यक्ष रोशन रतूड़ी, निदेशक प्रोफेसर आशीष मिश्र, चेतन शर्मा, दर्शन महाविद्यालय के प्रधानाचार्य राधा मोहन दास, कार्यक्रम संयोजक सिद्धार्थ पोखरियाल, डॉ. पूजा जुयाल, सुभाष रमोला, डॉ. मनीषा पंत, डॉ. नरेंद्र, डॉ. श्याम सिंह कुंजवाल आदि मौजूद थे।

दिव्यांग बच्चों के लिए बनेगा आवासीय विद्यालय : मेयर

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी की ओर से कार्यशाला

अमर उजाला ब्यूरो

मुनिकीरेती । उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी की ओर से श्री दर्शन संस्कृत महाविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में दिव्यांगों के दैनिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों की जानकारी दी गई।

मुनिकीरेती स्थित महाविद्यालय सभागार हॉल में आयोजित दिव्यांग शिक्षा में अनुसंधान विषय पर आयोजित दूसरे दिन की कार्यशाला का मेयर अनिता ममगाईं ने शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि शोध पर सधा हुआ काम होना जरूरी है, शोध ऐसा हो जो राज्य और देश को प्रगति की ओर ले जाए। मेयर ने नगर निगम ऋषिकेश में दिव्यांग बच्चों के लिए आवासीय विद्यालय संचालन किए जाने का आश्वासन दिया।

दिव्यांगों के दैनिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों से संबंधित विषयों पर शोध के बारे में बताया

दून विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर डॉ. हर्ष डोभाल ने दिव्यांगता में शोध को प्रारंभ करने के लिए सही प्रकरण के चुनाव, दिव्यांग लोगों के दैनिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों से संबंधित विषयों पर शोध के बारे में बताया। डॉ. दीक्षित ने शोध लेखन में भाषा व्याकरण के चुनाव में भाषा अनुप्रयोग व भाषण पर जोर दिया।

इसके अलावा उन्होंने अब तक किए गए शोध की एक रूपरेखा प्रस्तुत की। इस मौके पर वीर चंद्र सिंह गढ़वाली वानिकी विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर एसपी सती, कार्यशाला संयोजक डॉ. सिद्धार्थ पोखरियाल, डॉ. पूजा जुयाल, डॉ. श्याम कुंजवाल, निधि पोखरियाल, मनीषा पंत, आचार्य कमल डिमरी, तरुण नेगी सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।